CORDOVA® App 24X7 For Teachers Only

FREE SMART CLASS SOFTWARE WITH WEB SUPPORT

For Teachers Only

सुगम हिंदी व्याकरण

CORDOVA®

Scanned with CamScanner

विषय-सूची (Contents)

विषय		पृष्ठ संख्या
1. भाषा और व्याकरण	(Language and Grammar)	5
2. वर्ण-विचार	(Orthography-Phonology)	13
3. संधि	(Joining)	22
4. शब्द-विचार	(Morphology)	30
5. पर्यायवाची शब्द	(Synonyms)	38
6. विलोम शब्द	(Antonyms)	42
7. एकार्थक से प्रतीत होने वाले शब्द	(Words Apparently Similar in Meaning)	45
8. अनेकार्थक शब्द	(Homonyms)	51
9. अनेक शब्दों के लिए एक शब्द	(One Word Substitution)	54
10. समरूपी भिन्नार्थक शब्द	(Paironyms)	57
11. उपसर्ग	(Prefix)	61
12. प्रत्यय	(Suffix)	66
13. समास	(Compound)	74
14. संज्ञा	(Noun)	82
15. लिंग	(Gender)	89
16. वचन	(Number)	97
17. कारक	(Case)	105
18. सर्वनाम	(Pronoun)	114
19. विशेषण	(Adjective)	123
20. क्रिया	(Verb)	132
21. काल	(Tense)	142
विशेष गतिविधि (खेल-खेल में)	(Fun Activity)	148
22. अव्यय–	(Indeclinable)	149
क्रियाविशेषण	(Adverb)	149
संबंधबोधक	(Preposition)	154
समुच्चयबोधक (योजक)	(Conjunction)	156
विस्मयादिबोधक	(Interjection)	161
निपात	(Particle)	163
23. पद-परिचय	(Parsing)	165
24. वाक्य-विचार	(Syntax)	170
25. शब्द तथा वाक्य संबंधी अशुद्धि-शोधन	(Correction of Incorrect Words and Sentences)	179
26. पदबंध	(Phrase)	185
27. वाच्य	(Voice)	188
28. विराम-चिह्न	(Punctuation)	193
29. मुहावरे तथा लोकोक्तियाँ	(Idioms and Proverbs)	197
30. अलंकार	(Figure of Speech)	205
31. रस	(Ras)	210
32. पत्र-लेखन	(Letter Writing)	214
33. संवाद-लेखन	(Dialogue Writing)	221
34. सार-लेखन	(Precis Writing)	223
35. प्रतिवेदन-लेखन	(Report Writing)	225
36. श्रुतभाव-ग्रहण	(Listening Comprehension)	226
37. अनुच्छेद-लेखन	(Paragraph Writing)	227
38. निबंध-लेखन	(Essay Writing)	230
39. अपठित गद्यांश	(Unseen Passages)	239
40. अपठित पद्यांश	(Unseen Extract)	242
41. मौखिक रचना	(Oral Composition)	245
परिभाषाएँ	(Definitions)	247
श्रुतभाव-पाठ	(Listening Text)	249
❑ रचनात्मक गतिविधि–I-II, अभ्यास प्रश्न-पत्र–I		250–253
❑ रचनात्मक गतिविधि–III-IV		254
❑ अभ्यास प्रश्न-पत्र–II		255–256

Scanned with CamScanner

भाषा और व्याकरण
(Language and Grammar)

भाषा

अपने भावों और विचारों को व्यक्त करने का एकमात्र साधन **भाषा** है। मानव समाज में रहता है और अपने भावों और विचारों को एक-दूसरे के साथ बाँटता है, इसी कारण मनुष्य ने इतनी प्रगति की है। यदि भाषा न होती, तो ज्ञान का प्रचार-प्रसार भी नहीं हो सकता था। भाषा वह साधन है, जिसके द्वारा मनुष्य अपने मन के भावों और विचारों को बोलकर और लिखकर प्रकट करता है; जैसे-

अगले दिन माँ अख़बार पढ़ते हुए राहुल से बोलीं-

राहुल, तुम्हारे स्कूल में कल जो हस्तकला-प्रदर्शनी लगी थी, उसके बारे में आज के अख़बार में छपा है। इसमें लिखा है – बच्चों ने इस प्रदर्शनी में अनेक तरह की चीजे अपने हाथों से बनाकर लगाई थीं। इस प्रदर्शनी में सभी बच्चों ने बढ़-चढ़कर हिस्स लिया।

अब आप बताइए-

स्कूल से देर से आने की सूचना राहुल ने अपनी माँ को कैसे दी?

....

राहुल की माँ को कैसे पता चला कि आज राहुल स्कूल से देर से आएगा?

....

संवाददाता ने हस्तकला-प्रदर्शनी की सूचना लोगों तक कैसे पहुँचाई?

....

राहुल की माँ को कैसे जानकारी मिली कि हस्तकला-प्रदर्शनी में बच्चों ने अनेक तरह की चीज़ें बनाई थीं?

....

अब आप समझ गए होंगे कि हम अपने विचारों का आदान-प्रदान **बोलकर**, **सुनकर**, **लिखकर** व **पढ़कर** करते हैं। इसे ह **षा** कहते हैं।

Scanned with CamScanner

निम्नांकित चित्रों को देखिए और नीचे लिखिए कि चित्र क्या समझा रहे हैं–

....

ये चित्र आपने सड़क के किनारे अथवा किसी सार्वजनिक स्थान पर अवश्य ही देखे होंगे। ये संकेत की भाषा में हमें कुछ समझा रहे हैं। इन्हें हम समझ सकते हैं कि हॉर्न नहीं बजाना है तथा यू (U) टर्न नहीं लेना है। लेकिन इन संकेतों से सारी बातें और भाव व्यक्त नहीं हो सकते। अत: सारे भावों और विचारों की पूरी तरह अभिव्यक्ति के लिए हमें भाषा की आवश्यकता होती है। यह वरदान केवल मनुष्य को ही प्राप्त है कि वह भाषा का प्रयोग कर सकता है। संसार के अन्य सभी जीवों को एक ही ध्वनि का उच्चारण आता है; जैसे– चूहे को चूँ-चूँ, कुत्ते को भों-भों आदि। मनुष्य ने अपने अनेक ध्वनि संकेतों से भाषा को विकसित कर लिया है।

वे ध्वनि चिह्न जिनके माध्यम से मनुष्य अपने भावों और विचारों को व्यक्त करता है, भाषा कहलाती है।

भाषा के दो रूप होते हैं–

(क) मौखिक भाषा– भाषा का वह रूप जिसमें वक्ता अपनी बात बोलकर समझाता है और श्रोता सुनकर समझता है, उसे **मौखिक भाषा** कहते हैं; जैसे–

सौम्या ने अपनी कक्षा में एक पहेली पूछी–

Scanned with CamScanner

आपने ध्यान दिया कि सौम्या ने **बोलकर** पहेली पूछी और रवि ने उसे **सुनकर** उत्तर दिया। ये ही भाषा का **मौखिक रूप** है। भाषा का यह रूप मनुष्य को सहज ही प्राप्त होता है, इसका आधार स्वर(आवाज़) है, जो ध्वनियों के उच्चारण द्वारा भावों और विचारों को बोलकर प्रकट करता है। भाषा के इस रूप को सीखने के लिए मनुष्य को किसी औपचारिक प्रशिक्षण की आवश्यकता नहीं होती। शिशु अपने परिवार से इसे सहज रूप में प्राप्त करता है। भाषा के इस रूप को परस्पर बातचीत, फ़ोन, रिकॉर्ड, रेडियो तथा दूरदर्शन आदि पर प्रयोग में लाया जाता है।

(ख) लिखित भाषा– भाषा के जिस रूप में एक व्यक्ति लिखकर अपने विचारों को प्रकट करता है तथा दूसरा व्यक्ति पढ़कर उसके विचारों को समझता है, उसे **लिखित भाषा** कहते हैं; जैसे–

राहुल ने एक पेन का विज्ञापन तैयार किया–

राहुल ने **लिखकर** विज्ञापन बनाया और माँ ने उसे **पढ़कर** अपने विचार प्रकट किए। ये भाषा का **लिखित रूप** है।

भाषा का यह रूप स्थायी होता है। इस रूप के प्रयोग के लिए औपचारिक प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। जो साक्षर औ पढ़े-लिखे लोग हैं, वही इस रूप का प्रयोग अच्छी तरह कर पाते हैं। इसमें भाषा विशेष के ध्वनि-चिह्नों की लिपि का ज्ञा आवश्यक है। भाषा के लिखित रूप द्वारा ही ज्ञान को संचित किया जा सकता है। इसी माध्यम से ज्ञान एक देश से दूसरे देश त और एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचता है।

भारत की राष्ट्रभाषा हिंदी– हिंदी भारत की राष्ट्रभाषा है। राष्ट्रभाषा उसे कहते हैं, जिसका प्रयोग देश के अधिकां निवासियों द्वारा किया जाता है और हिंदी भारत के कोने-कोने में बोली और समझी जाती है। भारत में हिंदी लगभग **70 प्रतिश** बोली व समझी जाती है, इसलिए भारत की राष्ट्रभाषा हिंदी है।

राजभाषा– राजभाषा का अर्थ है–राज-काज की भाषा। अर्थात जिस भाषा का देश के कार्यालयों में राज-काज के लिए प्रयो किया जाता है, उसे **राजभाषा** कहते हैं।

Scanned with CamScanner

मातृभाषा– मातृभाषा का अर्थ है– माँ द्वारा प्राप्त भाषा। जिस भाषा को बालक अपनी माँ या अपने परिवार द्वारा सीखता है, उसे **मातृभाषा** कहते हैं। मातृभाषा से सबसे पहले बालक का परिचय होता है। अगर किसी बच्चे की माँ या परिवार के लोग मराठी बोलते होंगे, तो वह बच्चा भी मराठी ही बोलेगा।

विशेष भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 के तहत 14 सितंबर, 1949 को हिंदी को राष्ट्र भाषा का दर्जा मिला था। प्रत्येक वर्ष हम 14 सितंबर को हिंदी दिवस के रूप में मनाते हैं।

आज विश्व में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषाओं में हिंदी का दूसरा स्थान है।

भारत की संपर्क भाषा हिंदी है।

विश्व की संपर्क भाषा अंग्रेज़ी है।

भारत की मान्यता प्राप्त भाषाएँ–

संविधान की आठवीं अनुसूची में बाईस (22) भाषाओं को मान्यता दी गई है– संस्कृत, हिंदी, असमिया, ओडिया, उर्दू, कन्नड़, कश्मीरी, कोंकणी, डोगरी, तमिल, तेलुगू, गुजराती, नेपाली, पंजाबी, बंगला, बोडो, मराठी, मणिपुरी, मलयालम, संथाली, सिंधी, मैथिली। स्वतंत्रता के पश्चात हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं का तेज़ी से विकास हुआ है।

बोली– एक क्षेत्र विशेष में बोली जाने वाली भाषा का विशिष्ट रूप बोली कहलाता है। बोली का साहित्य लिखित न होकर मौखिक ही रहता है। बोली में ही मुहावरे, लोकोक्तियाँ, लोकगीत, लोककथाओं आदि का सौंदर्य देखा जा सकता है। इससे एक अंचल विशेष प्रभावित होता है। लिखित साहित्य के अतिरिक्त अन्य सभी प्रकार का सौंदर्य बोली से प्रकट होता है। केवल प्रचलित मौखिक रूप होने के कारण यह स्थान-स्थान पर बदलती रहती है। इसकी तुलना में भाषा का क्षेत्र व्यापक होता है।

क्षेत्र के आधार पर हिंदी बोलियों का विभाजन–

1. **पूर्वी हिंदी**– अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी आदि।
2. **पश्चिमी हिंदी**– खड़ी बोली, हरियाणवी, ब्रजभाषा, बुंदेली, कन्नौजी आदि।
3. **राजस्थानी हिंदी**– जयपुरी, जोधपुरी, मेवाड़ी, हाड़ौती, मेवाती आदि।
4. **पहाड़ी हिंदी**– गढ़वाली, हिमाचली, कुमाऊँनी, मंडियाली आदि।
5. **बिहारी हिंदी** – मैथिली, मगही, भोजपुरी, अंगिका, वज्जिका आदि।

उपभाषा– जब बोली का क्षेत्र बढ़ जाता है और उसमें साहित्य-रचना भी की जाती है, तो बोली **उपभाषा** बन जाती है। जैसे–खड़ी बोली, मैथिली, अवधी और ब्रजभाषा ये चारों ही बोलियाँ हैं, किंतु इनमें साहित्य की रचना की गई है, इस कारण ये चारों उपभाषाएँ बन गई हैं। इन चारों में ही उत्तम साहित्य उपलब्ध हैं।

भाषा एवं बोली में अंतर– 'भाषा' व 'बोली' में अंतर है। भाषा का क्षेत्र विस्तृत होता है जबकि स्थानीय रूप होने के कारण बोली का क्षेत्र अपेक्षाकृत सीमित होता है। भाषा में 'साहित्य रचना' होती है, बोली में 'साहित्य रचना' नहीं होती। 'भाषा' का प्रयोग सरकारी काम-काज में किया जाता है। 'बोली' का प्रयोग क्षेत्र-विशेष में बोलचाल के लिए ही होता है।

लिपि– लिपि का अर्थ है– लिखने का ढंग। यह विद्वानों द्वारा प्रत्येक भाषा-लेखन के लिए अलग-अलग तैयार की गई है। जैसे– संस्कृत, हिंदी, मराठी, संथाली, नेपाली, बोडो आदि भाषाओं की लिपि **देवनागरी** है। देवनागरी लिपि का विकास ब्राह्मी लिपि से हुआ है। अंग्रेज़ी, जर्मन, फ्रेंच आदि भाषाओं की लिपि **रोमन** है। यूरोप की अधिकांश भाषाएँ थोड़े बहुत परिवर्तन के साथ

Scanned with CamScanner

इसी लिपि का प्रयोग करती हैं। उर्दू तथा अरबी **फ़ारसी** लिपि में लिखी जाती हैं और पंजाबी की लिपि **गुरुमुखी** के नाम से जानी जाती है।

अत: हम कह सकते हैं कि–

भाषा-लेखन के लिए निश्चित चिह्नों की व्यवस्था को लिपि कहते हैं।

विशेष
- देवनागरी लिपि विश्व की एकमात्र वैज्ञानिक लिपि है।
- देवनागरी लिपि बाएँ से दाएँ लिखी जाती है। अधिकांश लिपियाँ बाएँ से दाएँ लिखी जाती हैं पर फ़ारसी लिपि दाएँ से बाएँ लिखी जाती है।
- कंप्यूटर पर **यूनीकोड** द्वारा देवनागरी में लिखे लेख का किसी भी भाषा में अनुवाद किया जा सकता है।

साहित्य– प्रत्येक भाषा में ज्ञान का अथाह भंडार है। यह पीढ़ियों से संचित होता आ रहा है। यह ज्ञान ही साहित्य है। साहित्य ज्ञान का संचित कोष है। युगों से एकत्रित ज्ञान का भंडार है।

साहित्य दो प्रकार के होते हैं– 1. गद्य साहित्य 2. पद्य साहित्य

(1) गद्य साहित्य– गद्य साहित्य में साहित्यकार सामान्य रूप से बोलचाल की भाषा में अपने विचार व्यक्त करते हैं। गद्य साहित्य के अंतर्गत– कहानी, कथा, संस्मरण, निबंध, पत्र, उपन्यास, नाटक आदि आते हैं।

जैसे– साहित्यकार	–	मुंशी प्रेमचंद	महादेवी वर्मा	जयशंकर प्रसाद
रचना	–	गोदान	गिल्लू	ध्रुवस्वामिनी

(2) पद्य साहित्य– पद्य साहित्य में साहित्यकार तुकबंदी अथवा लय द्वारा अपने विचारों को व्यक्त करते हैं। पद्य साहित्य के अंतर्गत– छंद, पद, सवैया, सोरठा, कविता, दोहा आदि आते हैं।

कथा, संस्मरण, निबंध, पत्र, उपन्यास, नाटक आदि आते हैं।

जैसे– साहित्यकार	–	बिहारी	तुलसीदास	कबीरदास
रचना	–	सतसई	रामचरितमानस	बीजक

भाषा एवं व्याकरण– भाषा भावों और विचारों की अभिव्यक्ति का साधन है। भाषा की व्यवस्था हमारे भावों को आकार देती है। यदि भाषा की व्यवस्था बिगड़ जाए, तो वह अपना अर्थ और भाव दोनों खो देती है। भाषा की व्यवस्था के अनुसार ही यदि हमारे मन में एक शब्द आता है; जैसे– 'गाय' तो भाषा के इस व्यवस्थित शब्द से हमारे सामने स्वत: ही गाय की 'छवि' अंकित हो जाती है। यदि भाषा की इस व्यवस्था को बिगाड़ दिया जाए 'यगा' लिखा जाए, तो हमारे मस्तिष्क में वह छवि नहीं उभर सकती। अत: भाषा की व्यवस्था बहुत ज़रूरी है। जैसी व्यवस्था और अव्यवस्था का उदाहरण हमने शब्द के साथ देखा है, वैसा ही वाक्य के साथ भी होता है। इस व्यवस्था को बनाए रखने का कार्य व्याकरण करता है। इसी के माध्यम से भाषा की व्यवस्था में एकरूपता बनी रहती है।

व्याकरण द्वारा ही भाषा को लिखने, पढ़ने, बोलने और समझने के तरीके सिखाए जाते हैं। इसलिए भाषा की व्यवस्थित समझ के लिए व्याकरण पढ़ना बहुत ज़रूरी है।

अत: हम कह सकते हैं कि–

भाषा के शुद्ध रूप संबंधी नियमों का ज्ञान कराने वाला शास्त्र व्याकरण कहलाता है।

Scanned with CamScanner

व्याकरण में भाषा के लिखित और मौखिक दोनों रूपों का अध्ययन किया जाता है। व्यावहारिक दृष्टि से भाषा की लघुतम इकाई वाक्य है। वाक्य शब्दों से और शब्द वर्णों से बनते हैं। व्याकरण वर्ण, शब्द और वाक्य विषयों के विस्तृत ज्ञान का ग्रंथ है। इस आधार पर व्याकरण के तीन भेद किए जाते हैं–

व्याकरण →
- वर्ण-विचार (वर्णों की बनावट, उच्चारण, लेखन।)
- शब्द-विचार (शब्दों के विभिन्न रूप, भेद, उत्पत्ति व प्रयोग।)
- वाक्य-विचार (वाक्य रचना, प्रकार, प्रयोग, विराम-चिह्न।)

वर्ण-विचार – इसके अंतर्गत वर्णों की बनावट, उच्चारण, लेखन आदि पर विचार किया जाता है।

शब्द-विचार – इसके अंतर्गत शब्दों के विभिन्न रूप, भेद, उत्पत्ति व प्रयोग आदि के विषय में अध्ययन किया जाता है।

वाक्य-विचार – इसके अंतर्गत वाक्य रचना, प्रकार, प्रयोग, विराम-चिह्न आदि के विषय में अध्ययन किया जाता है।

व्याकरण वर्ण, शब्द और वाक्य विषयों के विस्तृत ज्ञान का ग्रंथ है।

आओ पाठ दोहराएँ

कौशल-पठन (उच्चारण, अबोध-भाषण

- भाषा के द्वारा मनुष्य अपने भावों और विचारों को व्यक्त करता है।
- भाषा के रूप– मौखिक भाषा, लिखित भाषा।
- मौखिक भाषा के अंतर्गत वक्ता बोलकर और श्रोता सुनकर अपने विचारों का आदान-प्रदान करते हैं।
- लिखित भाषा के अंतर्गत व्यक्ति लिखकर और पढ़कर अपने विचारों का आदान-प्रदान करते हैं।
- भाषा-लेखन के लिए निश्चित चिह्नों की व्यवस्था को लिपि कहते हैं।
- देवनागरी लिपि बाएँ से दाएँ और फ़ारसी लिपि दाएँ से बाएँ लिखी जाती है।
- राजभाषा का अर्थ– राज-काज की भाषा।
- हिंदी भारत की संपर्क भाषा है।
- अंग्रेज़ी विश्व की संपर्क भाषा है।
- बोली भाषा का अल्पविकसित रूप है।
- उपभाषा बोली का विस्तृत रूप है।
- साहित्य के प्रकार– गद्य साहित्य और पद्य साहित्य।
- व्याकरण के भेद– वर्ण-विचार, शब्द-विचार और वाक्य विचार।

अभ्यास

मौखिक

कौशल-वाचन (बोध, सं

1. भाषा के किस रूप का आप अधिक प्रयोग करते हैं?
2. विश्व की और भारत की संपर्क भाषा कौन-सी है?
3. कंप्यूटर पर किसके द्वारा देवनागरी में लिखे लेख का किसी भी भाषा में अनुवाद किया जा सकता है?

Scanned with CamScanner

1. निम्नलिखित वाक्यों में ✓ या ✗ निशान लगाइए-

(क) संकेतों के द्वारा हम अपने विचारों को पारस्परिक रूप से पहुँचा सकते हैं। ☐

(ख) भाषा का लिखित रूप स्थायी है। ☐

(ग) राजभाषा का देश के कार्यालयों में राज-काज के लिए प्रयोग किया जाता है। ☐

(घ) विश्व में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषाओं में हिंदी का प्रथम स्थान है। ☐

(ङ) व्याकरण के दो भेद होते हैं। ☐

(च) भाषा और बोली में कोई अंतर नहीं होता है। ☐

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उचित उत्तर में ✓ निशान लगाइए-

(क) साहित्य के कितने प्रकार होते हैं?

दो ☐ तीन ☐ चार ☐

(ख) लिखित भाषा में विचारों को व्यक्त कैसे करते हैं?

बोलकर ☐ सुनकर ☐ लिखकर ☐

(ग) हिंदी को राष्ट्रभाषा का दर्जा कब मिला?

14 सितंबर, 1948 ☐ 14 सितंबर, 1949 ☐ 14 अक्तूबर, 1949 ☐

(घ) संविधान की आठवीं अनुसूची में कितनी भाषाओं को मान्यता दी गई है?

22 ☐ 24 ☐ 25 ☐

(ङ) पद्य साहित्य के अंतर्गत क्या आता है?

कहानी ☐ छंद ☐ उपन्यास ☐

(च) वाक्य-विचार के अंतर्गत किसका अध्ययन किया जाता है?

शब्दों का ☐ वर्णों का ☐ वाक्यों का ☐

3. दिए गए कोष्ठक में से उचित शब्दों से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

(क) हिंदी हमारी .... है। (राष्ट्रभाषा / लिखित भाषा)

(ख) लिखित भाषा का रूप .... होता है। (स्थायी / अस्थायी)

(ग) व्याकरण भाषा को .... बनाता है। (शुद्ध / अशुद्ध)

(घ) मन के भावों को लिपिबद्ध करके प्रकट करना .... कहलाती है। (मौखिक भाषा / लिखित भाषा)

(ङ) भारत की संपर्क भाषा .... है। (अंग्रेज़ी / हिंदी)

(च) गढ़वाली .... हिंदी है। (राजस्थानी / पहाड़ी)

4. निम्नलिखित हिंदी बोलियों को सही शीर्षक तक पहुँचाइए-

पूर्वी	पश्चिमी
....	....
....	....
....	....

Scanned with CamScanner

5. निम्नलिखित भाषाओं को उनकी लिपि से मिलाइए-

हिंदी	देवनागरी	फ्रेंच
अंग्रेजी		संस्कृत
मराठी	रोमन	नेपाली
जर्मन		

6. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

(क) भाषा किसे कहते हैं?

(ख) लिपि से आप क्या समझते हैं?

(ग) भाषा और बोली में अंतर लिखिए।

7. आप स्कूल में प्रार्थना कर रहे हैं। तभी अचानक एक बच्चा बेहोश होकर गिर जाता है। तब आप क्या करेंगे और क्यों?

मूल्यपरक प्रश्न

गतिविधि

रचनात्मक-लेखन (विचार, भाव, लिखावट)

- मुंशी प्रेमचंद और जयशंकर प्रसाद का चित्र बनाकर या चिपकाकर इंटरनेट की मदद से उनके द्वारा रचित कहानियों और उपन्यासों के नाम लिखिए।
- दिए गए चित्र को ध्यान से देखिए-

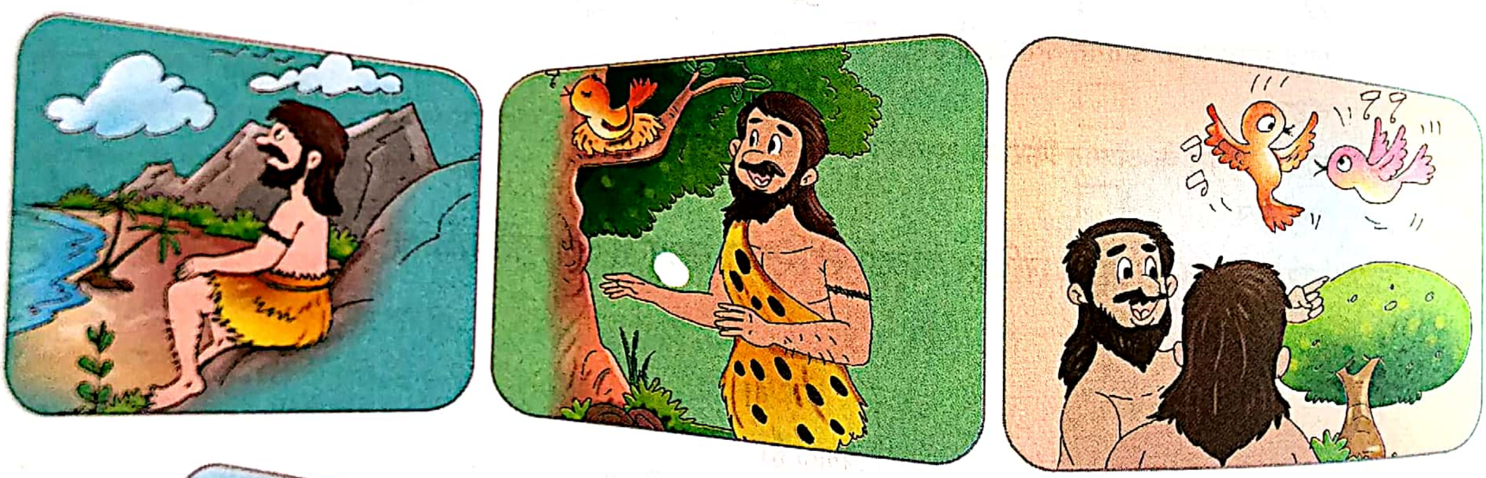

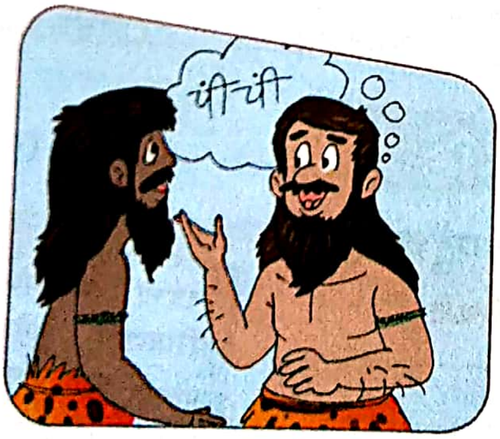

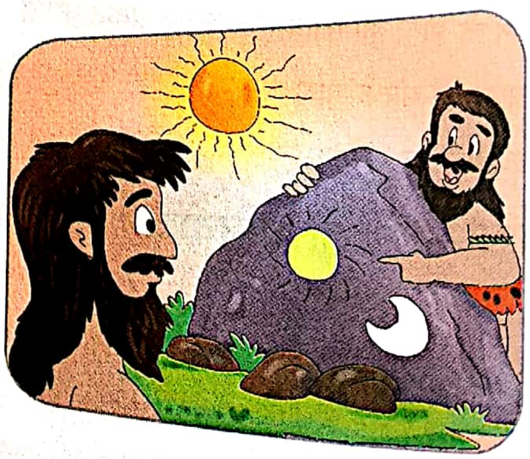

भाषा कैसे बनी? अब इस विषय पर कक्षा में चर्चा कीजिए।

वर्ण-विचार
(Orthography–Phonology)

निम्नांकित चित्रों को देखकर उनके नाम का उच्चारण कीजिए। उच्चारण में रुक-रुककर ध्वनियों को समझने का प्रयास भी कीजिए–

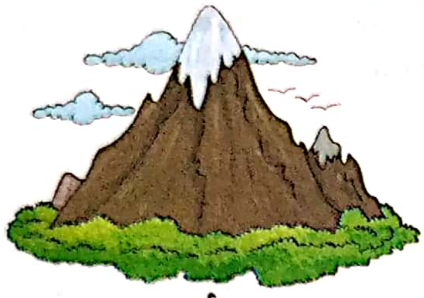

पर्वत
प् + अ + र् + व् + अ + त् + अ

घोड़ा
घ् + ओ + ड़् + आ

पुष्प
प् + उ + ष् + प् + अ

संसार में अनेक ध्वनियाँ प्रचलित हैं। मनुष्य के मुख से अनेक प्रकार की ध्वनियाँ निकलती हैं। लेकिन समस्त ध्वनियाँ वर्ण नहीं होती हैं। भाषा के अंतर्गत कुछ ध्वनियों को ही स्वीकृत करके उनके चिह्न अंकित किए गए हैं। उपर्युक्त सब छोटी-छोटी ध्वनियाँ हैं। इन्हें वर्ण कहते हैं। वर्ण को भाषा की सबसे छोटी इकाई माना जाता है। वर्ण के और खंड नहीं किए जा सकते।

अतः हम कह सकते हैं कि–

वह ध्वनि चिह्न जिनके और खंड नहीं किए जा सकते वर्ण कहलाते हैं।

वर्णमाला (Alphabet)– वर्णमाला का शाब्दिक अर्थ होता है– वर्ण + माला = वर्णमाला अर्थात वर्णों का समूह।

किसी भी भाषा के मूल ध्वनि-चिह्नों के व्यवस्थित समूह को **वर्णमाला** कहते हैं।

वर्ण के दो भेद होते हैं–

(1) स्वर– जिन ध्वनियों के उच्चारण के समय हवा बिना किसी रुकावट के मुख से बाहर आती है, वे स्वर कहलाते हैं। स्वरों का उच्चारण स्वतंत्र रूप से होता है।

हिंदी भाषा में ग्यारह (11) स्वर होते हैं, जिन्हें स्वरमाला कहते हैं– अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ।

उच्चारण में लगने वाले समय के आधार पर स्वरों के तीन भेद होते हैं–

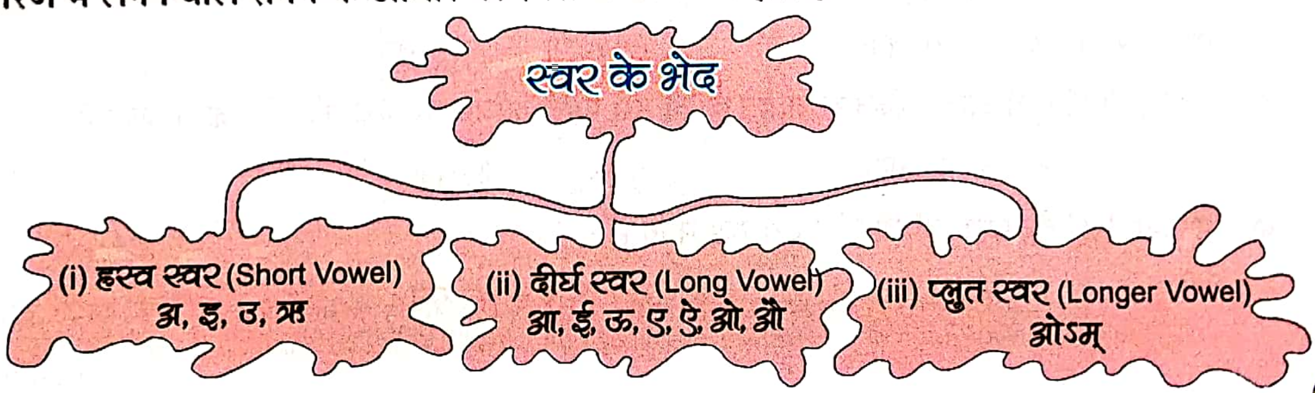

Scanned with CamScanner

(i) ह्रस्व स्वर– जिन स्वरों के उच्चारण में सबसे कम समय लगता है, उन्हें **ह्रस्व स्वर** कहते हैं। ये चार होते हैं– **अ, इ, उ** तथा **ऋ**।

(ii) दीर्घ स्वर– जिन स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व स्वर से दोगुना समय लगता है, उन्हें **दीर्घ स्वर** कहते हैं। दीर्घ स्वर की संख्या सात होती है– **आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ** तथा **औ**।

(iii) प्लुत स्वर– जिन स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व स्वर से तीन गुना समय लगता है, उन्हें **प्लुत स्वर** कहते हैं। इसका चिह्न (ऽ) है, इसका प्रयोग प्रायः पुकारने, रोने या ज़ोर-से गाते समय किया जाता है; जैसे– ओऽम, आऽऽ आदि।

मात्राएँ– स्वरों का उच्चारण स्वतंत्र रूप से भी होता है तथा ये व्यंजनों के साथ मिलकर भी बोले जाते हैं। जब ये व्यंजनों के साथ मिलकर प्रयोग किए जाते हैं, तो प्रत्येक स्वर का एक चिह्न होता है, जो उसकी मात्रा कहलाता है। प्रत्येक स्वर का व्यंजन के साथ मिला हुआ रूप उसकी **मात्रा** कहलाता है।

स्वरों की मात्राएँ

स्वर	मात्रा	मूल रूप	शब्द
अ	नहीं होती	अनार	–
आ	ा	आम	काग़ज़
इ	ि	इमली	निकाल
ई	ी	ईख	पीला
उ	ु	उल्लू	नुकीला
ऊ	ू	ऊन	खून
ऋ	ृ	ऋषि	कृषक
ए	े	एड़ी	केला
ऐ	ै	ऐनक	नैना
ओ	ो	ओखली	मोर
औ	ौ	औरत	नौका

विशेष

- 'उ' तथा 'ऊ' की मात्राओं का प्रयोग प्रायः व्यंजनों के नीचे किया जाता है, परंतु व्यंजन 'र' में ये मात्राएँ आग लगाई जाती हैं; जैसे– र् + उ = रु, रुपया र् + ऊ = रू, रूप
- 'ऋ' स्वर का प्रयोग संस्कृत में किया जाता है। हिंदी में जो शब्द संस्कृत से आए हैं, उन्हीं तत्सम शब्दों में इसक प्रयोग होता है। हिंदी में इसका उच्चारण 'रि' की तरह होता है।
  ऋ– ऋतु, ऋषि, ऋण आदि। कृपा, मृग, सृष्टि, शृंगार आदि।
- जब 'र' को किसी व्यंजन से पहले जोड़ा जाता है, तो उसे दूसरे व्यंजन के ऊपर लिखते हैं।
  जैसे– र् + य = र्य, कार्य र् + ग = र्ग, स्वर्ग
- जब 'र' को किसी अन्य व्यंजन से जोड़ते हैं, तो उसे पहले व्यंजन के नीचे की ओर जोड़ा जाता है।
  जैसे– प् + र = प्र, प्रश्न ज् + र = ज्र, वज्र
- 'ट्' और 'ड्' के साथ 'र' जोड़ने पर ये रूप बनते हैं–
  जैसे– ट् + र = ट्र, ट्रक ड् + र = ड्र, ड्रम

Scanned with CamScanner

अनुस्वार (ं) (Nasal)– जिन स्वरों के उच्चारण में हवा केवल नासिका से निकले, उसे **अनुस्वार** कहते हैं। इसका चिह्न (ं) होता है। इसका प्रयोग वर्णों के ऊपर बिंदु के रूप में किया जाता है; जैसे– अंक, गंगा, लंगूर आदि।

अनुनासिक (ँ) (Semi Nasal) – इसका उच्चारण नाक और मुँह से होता है। इसका चिह्न (ँ) होता है। इसे चंद्रबिंदु भी कहते हैं; जैसे– आँख, चाँद, पाँच आदि।

अयोगवाह (After Sounds)– 'अं' और 'अ:' ऐसी ध्वनियाँ हैं, जो न तो स्वर हैं और न ही व्यंजन। इन्हें अयोगवाह कहते हैं। इसका अर्थ है, जो योग न होने पर भी साथ रहे। 'अं' और 'अ:' स्वरों और व्यंजनों में न रहने पर भी इनके साथ प्रयुक्त होते हैं।

विसर्ग (:)– इसका उच्चारण लगभग 'ह' के समान होता है। इसे व्यंजनों के आगे लगाया जाता है। इसका चिह्न (:) होता है; जैसे– प्रात:, दु:शासन, प्राय: आदि।

आगत ध्वनि– (ऑ) यह अंग्रेज़ी से हिंदी भाषा में आ गया है। इसका प्रयोग कुछ अंग्रेज़ी शब्दों को हिंदी में लिखते समय ही किया जाता है; जैसे– डॉक्टर, टॉफ़ी, कॉफ़ी आदि।

हलंत (्)– इसका प्रयोग व्यंजन के नीचे किया जाता है। जिस व्यंजन में स्वर नहीं मिला होता, वहाँ हलंत (्) का चिह्न लगाकर उसे स्पष्ट किया जाता है; जैसे– विद्यार्थी, द्वंद्व आदि।

(2) व्यंजन– ऐसी ध्वनियाँ जिनका स्वतंत्र रूप से लेखन संभव है, परंतु उच्चारण के लिए स्वरों की सहायता लेनी पड़ती है, उन्हें **व्यंजन** कहते हैं।

व्यंजनमाला

क वर्ग	क	ख	ग	घ	ङ	33
च वर्ग	च	छ	ज	झ	ञ	
ट वर्ग	ट	ठ	ड	ढ	ण	
त वर्ग	त	थ	द	ध	न	
प वर्ग	प	फ	ब	भ	म	
अंत:स्थ	य	र	ल	व		
ऊष्म	श	ष	स	ह		
संयुक्त	क्ष	त्र	ज्ञ	श्र		4
अन्य	ड़	ढ़				2

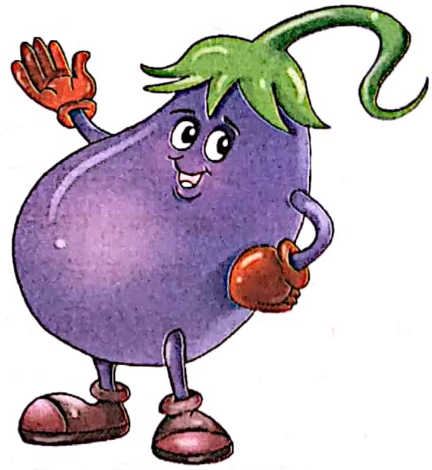

ये मूल रूप से तैंतीस (33) होते हैं। संयुक्त व्यंजन तथा अन्य को मिलाकर इनकी संख्या उनतालीस (39) होती है।

व्यंजन के तीन भेद होते हैं–

व्यंजन के भेद

(i) स्पर्श (Mutes)
क वर्ग, च वर्ग
ट वर्ग, त वर्ग, प वर्ग

(ii) अंत:स्थ (Semi)
य, र, ल, व

(iii) ऊष्म (Sibilants)
श, ष, स, ह

(i) स्पर्श व्यंजन– जिन वर्णों का उच्चारण करते समय श्वास वायु, कंठ, होंठ, जिह्वा को स्पर्श करती हुई बाहर निकलती है, उन्हें **स्पर्श व्यंजन** कहते हैं।

Scanned with CamScanner

स्पर्श व्यंजन की संख्या पच्चीस (25) होती है। इन्हें निम्नलिखित पाँच वर्गों में बाँटा जाता है–

क वर्ग	क	ख	ग	घ	ङ
च वर्ग	च	छ	ज	झ	ञ
ट वर्ग	ट	ठ	ड	ढ	ण
त वर्ग	त	थ	द	ध	न
प वर्ग	प	फ	ब	भ	म

विशेष इनका नाम प्रथम वर्ण के आधार पर जाना जाता है; जैसे– क वर्ग– क ख ग घ ङ
सभी व्यंजनों में 'अ' स्वर मिला होता है।

(ii) अंतःस्थ व्यंजन– जिन वर्णों का उच्चारण करते समय जीभ मुँह के किसी भाग को पूर्णतः स्पर्श नहीं करती, उ **अंतःस्थ व्यंजन** कहते हैं। इनकी संख्या चार (4) होती है– य, र, ल, व।

(iii) ऊष्म व्यंजन– जिन वर्णों के उच्चारण के समय मुँह द्वारा वायु तीव्र गति से रगड़ खाने की वजह से गर्म होकर निकल है, उन्हें **ऊष्म व्यंजन** कहते हैं। इनकी संख्या भी चार (4) होती है– श, ष, स, ह।

संयुक्त व्यंजन– दो विभिन्न व्यंजनों के जोड़ से बने व्यंजन **संयुक्त व्यंजन** कहलाते हैं; जैसे–

संयुक्त व्यंजन	शब्द
क्ष = क् + ष	क्षण, क्षमा, क्षत्रिय
त्र = त् + र	त्रिलोक, त्रिभुवन, त्रिभुज
ज्ञ = ज् + ञ	ज्ञानी, यज्ञ, ज्ञान, ज्ञात
श्र = श् + र	श्रम, श्रमिक, परिश्रम, श्री

द्वित्व व्यंजन– एक ही वर्ण का दो बार मिलना **द्वित्व व्यंजन** कहलाता है; जैसे–

न्न = गन्ना, अन्न, भिन्न, प्रसन्न।
ज्ज = सज्जन, छज्जा, सज्जा, मज्जा।
स्स = हिस्सा, रस्सा, गस्सा, मस्सा।
द्द = खद्दर, भद्दा, उद्देश्य।

संयुक्ताक्षर– जब एक स्वर रहित व्यंजन का भिन्न स्वर सहित व्यंजन से मेल होता है, तब वह **संयुक्ताक्षर** कहलाता है; जैसे– रम्य, दिव्य, प्रश्न, प्रसिद्ध आदि।

व्यंजनों का वर्गीकरण– उच्चारण की दृष्टि से व्यंजनों को दो भागों में बाँटा गया है–

(क) उच्चारण स्थान के आधार पर (ख) प्रयत्न के आधार पर

(क) उच्चारण स्थान के आधार पर– व्यंजनों का उच्चारण मुख के विभिन्न अवयवों की सहायता से किया जाता है; जैसे–

कंठ्य	(गले से)	क वर्ग
तालव्य	(तालु से)	च वर्ग तथा य और श
मूर्धन्य	(तालु के मूर्धा भाग से)	ट वर्ग (ड़ ढ़ सहित), ष
वर्त्स्य	(दाँतों की जड़ से)	स, ज़, र, ल
दंत्य	(दाँतों से)	त, थ, द, ध, न
ओष्ठ्य	(दोनों होंठ से)	प वर्ग
दंतोष्ठ्य	(नीचे का होंठ और ऊपर का दाँत)	व, फ़
स्वरयंत्रीय	(स्वरयंत्र से)	ह
नासिका	(नाक से)	ङ, ञ, ण, न, म

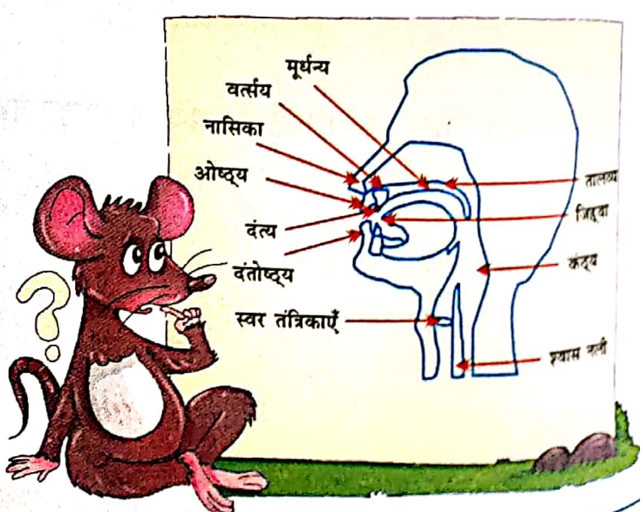

Scanned with CamScanner

प्राण (श्वास) के आधार पर– उच्चारण करते हुए सभी व्यंजनों के उच्चारण में श्वास की मात्रा एक-सी नहीं होती, किसी में कम तो किसी में अधिक होती है। श्वास मात्रा के आधार पर व्यंजनों के दो भेद होते हैं– (i) **अल्पप्राण** (ii) **महाप्राण**

(i) अल्प प्राण– जिन ध्वनियों के उच्चारण में वायु की मात्रा का कम प्रयोग होता है, वे **अल्पप्राण व्यंजन** कहलाते हैं। इसमें प्रत्येक वर्ग का **पहला**, **तीसरा** व **पाँचवाँ** व्यंजन तथा 'ड़, य, र, ल, व' आते हैं। अर्थात 'क, ग, ङ, च, ज, ञ, ट, ड, ण, त, द, न, प, ब, म तथा ड़, य, र, ल, व' अल्पप्राण व्यंजन हैं।

(ii) महाप्राण– जिन व्यंजनों के उच्चारण में श्वास वायु की मात्रा का अधिक प्रयोग होता है, उन्हें **महाप्राण व्यंजन** कहते हैं। इसमें प्रत्येक वर्ग का **दूसरा** व **चौथा** व्यंजन तथा ढ़, श, ष, स, ह आते हैं। अर्थात 'ख, घ, छ, झ, ठ, ढ, थ, ध, फ, भ तथा ढ़, श, ष, स, ह' महाप्राण व्यंजन हैं।

(ख) प्रयत्न के आधार पर–

- **स्वर यंत्री में श्वास का कंपन–** इस आधार पर व्यंजनों के दो भेद होते हैं–

(i) **अघोष वर्ण** (ii) **सघोष वर्ण**

(i) अघोष वर्ण– जिन ध्वनियों के उच्चारण में स्वर-यंत्रिका में किसी प्रकार का कंपन नहीं होता, उन्हें **अघोष वर्ण** कहते हैं। इसमें प्रत्येक वर्ग का **पहला** तथा **दूसरा** व्यंजन और 'श, ष, स' आते हैं। अर्थात- 'क, ख, च, छ, ट, ठ, त, थ, प, फ तथा श, ष, स' अघोष हैं। ये तेरह (13) होते हैं।

(ii) सघोष वर्ण– जिन ध्वनियों के उच्चारण में स्वर-यंत्रिका में कंपन होता है, उन्हें **सघोष वर्ण** कहते हैं। इसमें प्रत्येक वर्ग का **तीसरा**, **चौथा** और **पाँचवाँ** व्यंजन तथा 'ड़, ढ़, य, र, ल, व, ह' आते हैं। सभी स्वर भी सघोष कहलाते हैं। अर्थात ग, घ, ङ, ज, झ, ञ, ड, ढ, ण, द, ध, न, ब, भ, म' तथा 'ड़, ढ़, य, र, ल, व, ह।'

वर्ण-विच्छेद

शब्द का निर्माण वर्णों के मेल से होता है। यदि शब्द में प्रयुक्त वर्णों को अलग-अलग कर दिया जाए, तो उसे **वर्ण-विच्छेद** कहते हैं; जैसे– आश्चर्य = आ + श् + च् + अ + र् + य् + अ

आहट = आ + ह् + अ + ट् + अ

स्वागत = स् + व् + आ + ग् + अ + त् + अ

परिश्रम = प् + अ + र् + इ + श् + र् + अ + म् + अ

वर्ण-मेल– वर्णों को मिलाकर पहले वाली स्थिति में लाना वर्ण-मेल कहलाता है; जैसे–

क् + अ + म् + अ + र् + आ = कमरा श् + य् + आ + म् + अ = श्याम

क् + अ + र् + म् + अ = कर्म क् + अ + म् + प् + अ + न् + अ = कंपन

वर्तनी– 'वर्तनी' का शाब्दिक अर्थ है– पीछे चलना। हिंदी एक वैज्ञानिक भाषा है। इसका लेखन ध्वनियों के अनुरूप लिपि चिह्नों द्वारा किया जाता है।

अत: हम कह सकते हैं कि– **ध्वनियों के अनुसार आए लिपि चिह्नों को वर्तनी कहते हैं।**

मानक वर्तनी– वर्तनी के प्रयोग का निर्धारण विद्वानों के मान्यता प्राप्त शिष्ट मंडल द्वारा किया जाता है। आवश्यकता पड़ने पर लेखन के तरीकों में भी परिवर्तन होते रहते हैं; जैसे–

ग्र	को अब	अ
ग्रा		आ
रव		ख
द्य		द्‌य
झ		झ

Scanned with CamScanner

यह लेखन का तरीका मानक वर्तनी निर्धारण है। वर्तनी संबंधी कुछ ध्यान देने योग्य बातें–

1. मानक वर्तनी का प्रयोग करें।
2. संयुक्ताक्षरों में हलंत (्) लगाकर लिखें; जैसे– द्‌वार, विद्‌या आदि।
3. खड़ी पाई वाले व्यंजनों की पाई हटाकर संयुक्त रूप लिखें; जैसे– पत्ता, कुत्ता, ध्वनि आदि।
4. क्र तथा कृ और श्र तथा शृ में अंतर समझें।
5. संज्ञा शब्दों के साथ विभक्ति-चिह्न मिलाकर नहीं लिखा जाता है; जैसे– लड़की ने, कमरे में आदि।
6. सर्वनाम शब्दों के साथ पहला विभक्ति-चिह्न मिलाकर लिखा जाता है; जैसे– मैंने, तुमको, उसको आदि।
   किंतु दूसरा विभक्ति-चिह्न अलग आता है; जैसे– उसके लिए।
7. संयुक्त क्रियाएँ अलग-अलग लिखी जाती हैं; जैसे– पढ़ा करता था।
8. निम्नलिखित शब्दों के बीच में योजक (-) आता है।

तुलना सूचक शब्द	–	हरा-सा, मोटा-सा आदि।
द्‌वंद्‌व समास	–	भाई-बहन, माता-पिता आदि।
युग्म शब्द	–	ऊँच-नीच, लाभ-हानि आदि।
द्‌वित्व शब्द	–	बार-बार, धीरे-धीरे आदि।

9. 'कर' क्रिया जोड़कर लिखी जाती है; जैसे– गाकर, खाकर, आकर, पीकर आदि
10. बलाघात तथा शिरोरेखा का उपयुक्त प्रयोग करें अन्यथा शब्द का अर्थ बदल जाता है।
   जैसे– 1. आज जलसा (उत्सव) है।
   2. वहाँ जल-सा (पानी) है।
11. 'ड' तथा 'ढ' का उच्चारण 'ड़' तथा 'ढ़' से भिन्न होना चाहिए। यदि **बड़ा** को **'बडा'** पढ़ा जाए या **'पढ़ा'** को पढा पढ़ा जाए, तो उसका अर्थ बदल जाएगा। इन वर्णों की उच्चारण ध्वनि को ठीक से समझकर ही शब्द-लेखन में उसका उचित प्रयोग करना चाहिए। ड़ तथा ढ़ शब्द के प्रारंभ में नहीं आते हैं। निम्नांकित शब्दों के उच्चारण से हुए इन वर्णों का अंतर समझें।

ड	–	डर, डमरू, डाक, डाल, डलिया, डाकघर, डरपोक आदि।
ड़	–	लड़की, लड़ाई, सड़क, खिड़की, घोड़ा, तोड़ना, बड़ा आदि।
ढ	–	ढक्कन, ढोल, ढेर, ढाबा, ढील, ढोर, ढाई आदि।
ढ़	–	चढ़ना, पढ़ना, बुढ़िया, बढ़ई, दृढ़, गढ़ना आदि।

12. उर्दू से आए शब्दों में क़, ख़, ग़, ज़ और फ़ के नीचे बिंदी लगाई जाती है। इस बिंदी का प्रयोग अंग्रेज़ी शब्दों के हिंदी लेखन में भी किया जाता है; जैसे– फ़ूल, अंग्रेज़ी आदि। इस बिंदु को नुक्ता कहते हैं। प्रयोग से आने वाले अंतर को समझें–

उदाहरण	–	फूल	=	हिंदी अर्थ पुष्प उच्चारण होंठ मिलाकर
		फ़ूल	=	अंग्रेज़ी अर्थ मूर्ख उच्चारण दाँतों के बीच से
हिंदी	–	जरा	=	बुढ़ापा
उर्दू	–	ज़रा	=	थोड़ा-सा

उच्चारण तथा वर्तनी संबंधी अशुद्‌धियों के कारण भाषा का बोलना और लिखना प्रभावित होता है। इनके सही ज्ञान से हमें भाषा की शुद्‌धता बनाए रखनी है–

Scanned with CamScanner

1. ह्रस्व और दीर्घ स्वर का शुद्ध प्रयोग–

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
आधीन	अधीन	बिमारी	बीमारी	समाजिक	सामाजिक
पालतु	पालतू	क्योंकी	क्योंकि	बुद्धी	बुद्धि

2. ए, ऐ, औ संबंधी का शुद्ध प्रयोग–

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
एइसा	ऐसा	सइर	सैर	पइसा	पैसा
कउन	कौन	दउड़	दौड़	तउल	तौल

3. नासिक्य संबंधी का शुद्ध प्रयोग–

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
शरन	शरण	गुन	गुण	प्रान	प्राण
रनभूमि	रणभूमि	व्याकरन	व्याकरण	त्रिकोन	त्रिकोण

4. सामान्यतः की जाने वाली कुछ अन्य त्रुटियाँ–

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
परिक्षा	परीक्षा	वरसा	वर्षा	कक्छा	कक्षा
चइए	चाहिए	करिपा	कृपा	बानी	वाणी

आओ पाठ दोहराएँ

कौशल-पठन (उच्चारण, अबोध-भाषण)

- वर्णों के निश्चित क्रम को वर्णमाला कहते हैं।
- वर्ण के भेद– स्वर, व्यंजन।
- जब किसी वर्ण के उच्चारण के समय हवा बिना किसी रुकावट के मुख से बाहर निकलती है, उसे स्वर कहते हैं।
- स्वरों के प्रकार– ह्रस्व स्वर, दीर्घ स्वर, प्लुत स्वर।
- ह्रस्व स्वर के उच्चारण में सबसे कम समय लगता है तथा दीर्घ स्वर के उच्चारण में ह्रस्व स्वर से दोगुना समय लगता है।
- प्लुत स्वर के उच्चारण में ह्रस्व स्वर से तीन गुना समय लगता है।
- अनुस्वार का प्रयोग वर्णों के ऊपर बिंदु के रूप में किया जाता है।
- अनुनासिक का उच्चारण मुँह और नाक से होता है, इसे चंद्रबिंदु भी कहते हैं।
- स्वरों का उच्चारण स्वतंत्र रूप से और व्यंजनों के साथ भी होता है।
- व्यंजन के उच्चारण के लिए स्वरों की सहायता लेनी पड़ती है।
- व्यंजन के भेद– स्पर्श व्यंजन, अंतःस्थ व्यंजन और ऊष्म व्यंजन।
- स्पर्श व्यंजन का उच्चारण, स्थान विशेष को स्पर्श करके होता है।
- अंतःस्थ व्यंजन का उच्चारण स्थान विशेष को स्पर्श नहीं करता है।
- ऊष्म व्यंजन के उच्चारण के समय मुख से ऊष्मा निकलती है।
- व्यंजनों का वर्गीकरण– उच्चारण स्थान के आधार पर, प्रयत्न के आधार पर।
- प्राण (श्वास) के आधार पर– अल्पप्राण, महाप्राण।
- वर्णों को अलग-अलग करना वर्ण-विच्छेद कहलाता है।

Scanned with CamScanner

अभ्यास

मौखिक

कौशल-वाचन (बोध, संवाद)

1. वर्ण किसे कहते हैं?
2. स्वर और व्यंजन में क्या अंतर है?
3. अयोगवाह किसे कहते हैं?
4. प, फ, ब, भ, म का उच्चारण करके बताइए इनका उच्चारण स्थान कहाँ है?

लिखित

कौशल-लेखन (व्याकरण, शब्दावली, लिखावट)

1. निम्नलिखित वाक्यों में ✓ या ✗ निशान लगाइए-

(क) हिंदी में ग्यारह (11) स्वर होते हैं। ☐

(ख) सभी व्यंजनों में 'अ' स्वर मिला होता है। ☐

(ग) व्यंजनों का उच्चारण स्वतंत्र रूप से होता है। ☐

(घ) छोटी-से- छोटी ध्वनि जिसके टुकड़े नहीं किए जा सकते, उसे वर्ण कहा जाता है। ☐

(ङ) जिन ध्वनियों के उच्चारण में मुख से निकलने वाली श्वास वायु की मात्रा अधिक होती है, उन्हें अल्पप्राण कहा जाता है। ☐

(च) जिन वर्णों का उच्चारण करते समय श्वास वायु मुख के विभिन्न स्थानों को स्पर्श करती हुई बाहर निकलती है, उन्हें ऊष्म व्यंजन कहते हैं। ☐

2. शुद्ध शब्दों के आगे ✓ निशान लगाइए-

(क)	दड ☐	दंड ☐	दंन्ड ☐	दंञ्ड ☐
(ख)	क्रष्ण ☐	कृष्ण ☐	कृषण ☐	किष्ण ☐
(ग)	सांन्यासी ☐	संयासी ☐	संन्यासी ☐	सन्यासी ☐
(घ)	सपर्श ☐	स्पार्श ☐	सर्प्श ☐	स्पर्श ☐
(ङ)	रनभूमि ☐	रणभूमि ☐	रनभूमी ☐	रणभूमी ☐
(च)	सामाजिक ☐	समाजिक ☐	समजिक ☐	सामजिक ☐

3. अल्पप्राण वर्णों पर (गोला) लगाइए-

ट ख क ठ ग ढ ड ध ण ङ त च थ छ द ज ञ न ध झ

4. कोष्ठक में से सही शब्द छाँटकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

(क) सार्थक वर्णों के .... को शब्द कहते हैं। (विच्छेद / मेल)

(ख) संयुक्त व्यंजन .... होते हैं। (पाँच / चार)

(ग) जिन स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व स्वर से दोगुना समय लगता है, उसे .... स्वर कहते हैं। (प्लुत / दीर्घ)

(घ) स्पर्श व्यंजन .... होते हैं। (33 / 25)

(ङ) अं तथा अः को .... कहते हैं। (अयोगवाह / संयुक्त)

(च) जिन ध्वनियों के उच्चारण में स्वर-यंत्रिका में कंपन होता है, उसे .... कहते हैं। (सघोष / अघोष)

Scanned with CamScanner

5. निम्नलिखित वर्णों को उच्चारण के आधार पर उनके शीर्षक तक पहुँचाइए-

क	प	ष	फ	ट	ढ़	ख	त	ठ	ब	द	ग	भ	थ	न	घ

ओष्ठ्य	मूर्धन्य	दंत्य	कंठ्य
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....

6. 'क, च, ट, त, प' प्रत्येक वर्ग का पंचम वर्ण लिखकर प्रत्येक का अनुस्वार रूप में प्रयोग करते हुए शब्द लिखिए-

(क) क – ङ-अनुस्वार प्रयोग गंगा

(ख) च – ....

(ग) ट – ....

(घ) त – ....

(ङ) प – ....

7. निम्नलिखित शब्दों के वर्ण-विच्छेद कीजिए-

(क) व्यवस्था = ...

(ख) संपादक = ...

(ग) पुस्तकालय = ...

(घ) मोबाइल = ...

8. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

(क) ह्रस्व स्वर किसे कहते हैं?

(ख) व्यंजन किसे कहते हैं?

(ग) सघोष वर्ण और अघोष वर्ण में अंतर स्पष्ट कीजिए।

(घ) अल्पप्राण और महाप्राण में अंतर स्पष्ट कीजिए।

मूल्यपरक प्रश्न

9. **वर्णों के समूह से वर्णमाला बनती है और समूह में बहुत ताकत होती है। स्वतंत्रता सेनानियों ने भी समूह बनाकर भारत को आज़ाद कराने में अहम भूमिका निभाई। अब आप इस आज़ाद भारत के लिए क्या करेंगे कि यह देश और प्रगति करे?**

गतिविधि

रचनात्मक-लेखन (विचार, भाव, लिखावट)

- आपकी कक्षा में जिन बच्चों के नाम संयुक्त व्यंजन से शुरू होते हैं या उनके नाम में द्वित्व व्यंजन आता है, ऐसे नामों की सूची बनाइए।
- दिए गए इन वर्णों से अधिक-से-अधिक शब्द बनाइए। एक वर्ण को एक-से-अधिक बार प्रयोग कर सकते हैं।

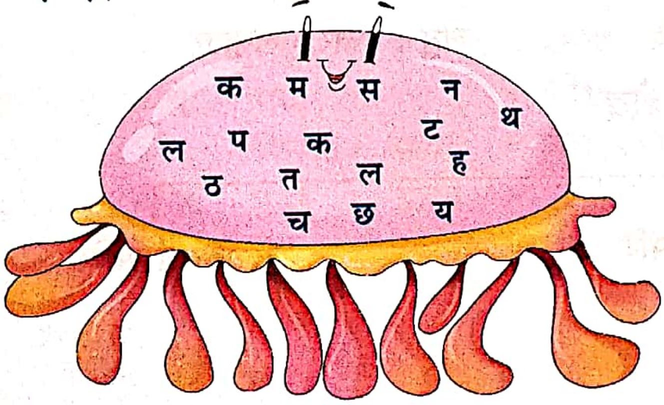

....

....

....

....

Scanned with CamScanner

संधि
(Joining)

संधि शब्द का सामान्य अर्थ

- जोड़
- मेल
- समझौता

संधि शब्द के तीन अर्थ स्पष्ट किए गए हैं। इनके अतिरिक्त **व्याकरण की दृष्टि से संधि का अर्थ है– वर्णों में मेल**; जैसे–

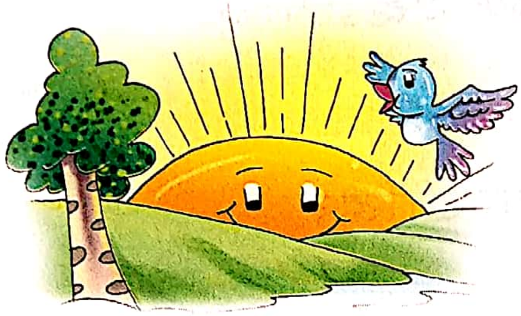
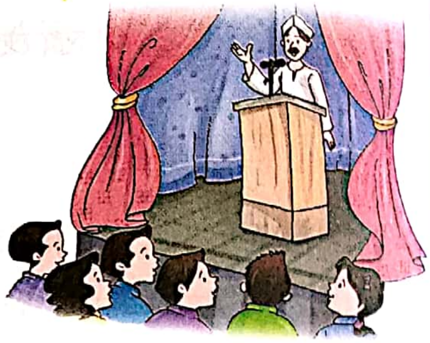

परीक्षा + अर्थी = परीक्षार्थी
↓ ↓ ↓
आ + अ = आ

भानु + उदय = भानूदय
↓ ↓ ↓
उ + उ = ऊ

वार्षिक + उत्सव = वार्षिकोत्सव
↓ ↓ ↓
अ + उ = ओ

उपर्युक्त उदाहरणों से स्पष्ट हो रहा है कि '**परीक्षा**' का '**आ**' तथा '**अर्थी**' का '**अ**' के पास-पास होने के कारण इनका उच्चारण मिलकर '**आ**' हो गया है। इसी तरह '**भानु**' का '**उ**' तथा '**उदय**' का '**उ**' मिलकर '**ऊ**' तथा '**वार्षिक**' का '**अ**' और '**उत्सव**' का '**उ**' मिलकर '**ओ**' हो गया है।

दो शब्द या शब्दांश जब परस्पर मिलते हैं, तो उनके मिलने से स्वर तथा व्यंजन में जो परिवर्तन आता है, उसे **संधि** कहते हैं।

अतः हम कह सकते हैं कि–

दो वर्णों के परस्पर मेल से उत्पन्न विकार (परिवर्तन) को संधि कहते हैं।

संधि-विच्छेद– संधि युक्त शब्दों को अलग (विच्छेद) करने की विधि **संधि-विच्छेद** कहलाती है; जैसे–

ब्रह्म + ऋषि = ब्रह्मर्षि   गज + इंद्र = गजेंद्र   लघु + उत्तर = लघूत्तर

संधि के तीन भेद हैं–

संधि के भेद

1. **स्वर संधि**
2. **व्यंजन संधि**
3. **विसर्ग संधि**

Scanned with CamScanner

(1) स्वर संधि– दो स्वरों के मेल से होने वाले परिवर्तन को **स्वर संधि** कहते हैं।

जैसे– वाचन + आलय = वाचनालय   नर + ईश = नरेश

↓ ↓ ↓   ↓ ↓ ↓

अ + आ = आ   अ + ई = ए

यहाँ '**वाचन**' शब्द के अंत में '**अ**' स्वर है और '**आलय**' के आरंभ में '**आ**' स्वर है। जब '**अ**' और '**आ**' का मेल हुआ, तो '**अ**' लुप्त हो गया और '**आ**' की मात्रा '**T**' लगाकर '**ना**' ने रूप ले लिया, जिससे '**वाचनालय**' शब्द बन गया। इसी तरह **नर** के अंत में '**अ**' स्वर और '**ईश**' के आरंभ में '**ई**' स्वर है। जब '**अ**' 'और' '**ई**' का मेल हुआ, तो '**अ**' और '**इ**' ने मिलकर '**ए**' का रूप ले लिया, जिससे '**नरेश**' शब्द बन गया।

स्वर संधि के पाँच भेद होते हैं–

(i) दीर्घ संधि– जब ह्रस्व या दीर्घ **अ, इ, उ,** के बाद क्रमशः ह्रस्व या दीर्घ **अ, इ, उ** आएँ, तो दोनों के मेल से **आ, ई** और **ऊ** हो जाते हैं। स्वरों के इस प्रकार के मेल को **दीर्घ संधि** कहते हैं; जैसे–

अ + अ = आ	–	सत्य	+	अर्थ	=	सत्यार्थ
		भाव	+	अनुसार	=	भावानुसार
अ + आ = आ	–	देव	+	आलय	=	देवालय
		धर्म	+	आत्मा	=	धर्मात्मा
आ + अ = आ	–	रेखा	+	अंकित	=	रेखांकित
		परीक्षा	+	अर्थी	=	परीक्षार्थी
आ + आ = आ	–	महा	+	आत्मा	=	महात्मा
		विद्या	+	आलय	=	विद्यालय
इ + इ = ई	–	मुनि	+	इंद्र	=	मुनींद्र
		रवि	+	इंद्र	=	रवींद्र
इ + ई = ई	–	क्षिति	+	ईश	=	क्षितीश
		गिरि	+	ईश	=	गिरीश
ई + इ = ई	–	नारी	+	इच्छा	=	नारीच्छा
		सती	+	इच्छा	=	सतीच्छा
ई + ई = ई	–	गौरी	+	ईश	=	गौरीश
		नारी	+	ईश्वर	=	नारीश्वर
उ + उ = ऊ	–	सु	+	उक्ति	=	सूक्ति
		गुरु	+	उपदेश	=	गुरूपदेश
उ + ऊ = ऊ	–	सिंधु	+	ऊर्मि	=	सिंधूर्मि
		लघु	+	ऊर्जा	=	लघूर्जा
ऊ + उ = ऊ	–	वधू	+	उत्सव	=	वधूत्सव
		भू	+	उत्सर्ग	=	भूत्सर्ग
ऊ + ऊ = ऊ	–	भू	+	ऊर्जा	=	भूर्जा
		वधू	+	ऊर्मि	=	वधूर्मि

(ii) गुण संधि– जब **अ** अथवा **आ** के बाद क्रमशः **इ, ई; उ, ऊ; ऋ** आए तो उसके स्थान पर **ए, ओ** और **अर्** हो जाता है; जैसे–

अ + इ = ए	–	नर	+	इंद्र	=	नरेंद्र
		शुभ	+	इच्छु	=	शुभेच्छु
अ + ई = ए	–	नर	+	ईश	=	नरेश
		राज	+	ईश्वर	=	राजेश्वर
आ + इ = ए	–	राजा	+	इंद्र	=	राजेंद्र
		यथा	+	इष्ट	=	यथेष्ट
आ + ई = ए	–	महा	+	ईश	=	महेश
		विमला	+	ईश्वर	=	विमलेश्वर
अ + उ = ओ	–	पुरुष	+	उत्तम	=	पुरुषोत्तम
		जन	+	उद्धार	=	जनोद्धार
अ + ऊ = ओ	–	भाव	+	ऊर्मि	=	भावोर्मि
		जल	+	ऊर्मि	=	जलोर्मि
आ + उ = ओ	–	कथा	+	उत्सव	=	कथोत्सव
		लंबा	+	उदर	=	लंबोदर
आ + ऊ = ओ	–	महा	+	ऊर्जा	=	महोर्जा
		गंगा	+	ऊर्मि	=	गंगोर्मि
अ + ऋ = अर्	–	सप्त	+	ऋषि	=	सप्तर्षि
		देव	+	ऋषि	=	देवर्षि
आ + ऋ = अर्	–	महा	+	ऋषि	=	महर्षि
		राजा	+	ऋषि	=	राजर्षि

Scanned with CamScanner

(iii) वृद्धि संधि– जब अ, आ के बाद ए, ऐ या ओ, औ आए, तो दोनों के स्थान पर क्रमशः ऐ और औ हो जाता है।

जैसे–

अ + ए = ऐ – एक + एक = एकैक
परम + ऐषणा = परमैषणा

अ + ऐ = ऐ – मत + ऐक्य = मतैक्य
भाव + ऐश्वर्य = भावैश्वर्य

आ + ए = ऐ – तथा + एव = तथैव
सदा + एव = सदैव

आ + ऐ = ऐ – महा + ऐश्वर्य = महैश्वर्य
राजा + ऐश्वर्य = राजैश्वर्य

अ + ओ = औ – जल + ओध = जलौध
परम + ओज = परमौज

अ + औ = औ – वन + औषध = वनौषध
सुर + औदार्य = सुरौदार्य

आ + ओ = औ – महा + ओजस्वी = महौजस्वी
महा + ओज = महौज

आ + औ = औ – महा + औत्सक्य = महौत्सक्य
महा + औषध = महौषध

(iv) यण संधि– इ, ई; उ, ऊ; ऋ के बाद कोई भिन्न स्वर आए, तो इनके मेल से क्रमशः य, व, और अर् हो जाता है।

जैसे–

इ + अ = य – यदि + अपि = यद्यपि
अति + अधिक = अत्यधिक

इ + आ = या – इति + आदि = इत्यादि
अति + आचार = अत्याचार

इ + उ = यु – अति + उत्तम = अत्युत्तम
प्रति + उत्तर = प्रत्युत्तर

इ + ऊ = ऊ – नि + ऊन = न्यून
वि + ऊह = व्यूह

उ + अ = व – सु + अस्ति = स्वस्ति
सु + अल्प = स्वल्प

उ + आ = वा – सु + आगत = स्वागत
अनु + आसन = अन्वासन

उ + इ = वि – अनु + इति = अन्विति
अनु + इत = अन्वित

उ + ए = वे – अनु + एषण = अन्वेषण
अनु + एषक = अन्वेषक

ऊ + आ = वा – वधू + आगमन = वध्वागमन
वधू + आदेश = वध्वादेश

ऋ + आ = रा – पितृ + आलय = पित्रालय
मातृ + आदेश = मात्रादेश

ऋ + उ = रु – पितृ + उपदेश = पित्रुपदेश

ऋ + इ = रि – मातृ + इच्छा = मात्रिच्छा

(v) अयादि संधि– जब ए, ऐ और ओ, औ के बाद कोई अन्य स्वर आए, तो उनके स्थान पर क्रमशः अय, आय, अव, आव हो जाता है; जैसे–

ए + अ = अय – ने + अन = नयन
शे + अन = शयन

ऐ + अ = आय – गै + अक = गायक
नै + अक = नायक

ऐ + इ = आयि – नै + इका = नायिका
गै + इका = गायिका

ओ + अ = अन – पो + अन = पवन
भो + अन = भवन

औ + अ = आव – पौ + अक = पावक
पौ + अन = पावन

औ + इ = आवि – नौ + इक = नाविक

औ + उ = आवु – भौ + उक = भावुक

Scanned with CamScanner

(2) व्यंजन संधि– किसी व्यंजन का किसी व्यंजन या स्वर से मेल होने पर व्यंजन में जो परिवर्तन होता है, उसे **व्यंजन संधि** कहते हैं।

व्यंजन संधि के नियम

1. वर्ग के पहले वर्ण (**क्, च्, ट्, त्, प्**) का तीसरे वर्ण (**ग्, ज्, ड्, द्, ब्**) **में** परिवर्तन–

दिक्	+	दर्शन	=	दिग्दर्शन	वाक्	+	ईश	=	वागीश
दिक्	+	अंत	=	दिगंत	अच्	+	अंत	=	अजंत
भगवत्	+	गीता	=	भगवद्गीता	सत्	+	गति	=	सद्गति
तत्	+	अनुसार	=	तदनुसार	तत्	+	भव	=	तद्भव

2. वर्ग के पहले वर्ण का पाँचवें वर्ण में परिवर्तन–

अगर वर्ग के पहले वर्ण (**'क्', 'च्', 'ट्', 'त्', 'प्'**) के पश्चात **'न'** अथवा **'म'** आए, तो प्रथम वर्ण पाँचवें में बदल जाता है, जैसे– **'क' का 'ङ', 'च' का 'ञ', 'ट्' का 'ण', 'त्' का 'न्'** और **'प्' का 'म'** हो जाता है। निम्नलिखित उदाहरण इस तरह हैं–

उत्	+	नयन	=	उन्नयन	सत्	+	मति	=	सन्मति
चित्	+	मय	=	चिन्मय	सत्	+	नारी	=	सन्नारी
तत्	+	मय	=	तन्मय	उत्	+	नति	=	उन्नति
दिक्	+	नाग	=	दिङ्नाग	वाक्	+	मय	=	वाङ्मय
उत्	+	नायक	=	उन्नायक					

'त्' संबंधी विशेष नियम

1. यदि **'त्'** व्यंजन के साथ **च, छ** आता है, तो **'त्'** का परिवर्तन **'च्'** में हो जाता है। इसी प्रकार **'त'** के पश्चात **ज, झ** हो, तो **'ज्'** हो जाता है तथा **'त्'** के पश्चात **'ल'** होने पर **'ल्'** हो जाता है; जैसे–

उत्	+	ज्वल	=	उज्ज्वल	सत्	+	जन	=	सज्जन
जगत्	+	जननी	=	जगज्जननी	सत्	+	चरित्र	=	सच्चरित्र
तत्	+	लीन	=	तल्लीन	उत्	+	लास	=	उल्लास

2. यदि **'त्'** के बाद **'ह'** व्यंजन आए, तो **'त्'** का **'द्'** तथा **'ह'** का **'ध'** हो जाता है; जैसे–

उत्	+	हार	=	उद्धार	उत्	+	हत	=	उद्धत
पत्	+	हति	=	पद्धति	उत्	+	हरण	=	उद्धरण

3. यदि **'त्'** के पश्चात **'श'** आए, तो **'त्'** का **'च'** और **'श'** का **'छ'** हो जाता है; जैसे–

उत्	+	शिष्ट	=	उच्छिष्ट	उत्	+	श्वास	=	उच्छ्वास
तत्	+	शिव	=	तच्छिव	सत्	+	शास्त्र	=	सच्छास्त्र

'छ' संबंधी नियम

यदि किसी स्वर के पश्चात **'छ'** आ जाए, तो **'छ'** से पहले **'च्'** वर्ण जुड़ जाता है; जैसे–

वृक्ष	+	छाया	=	वृक्षच्छाया	स्व	+	छंद	=	स्वच्छंद
जगत	+	छाया	=	जगच्छाया	अनु	+	छेद	=	अनुच्छेद
परि	+	छेद	=	परिच्छेद	संधि	+	छेद	=	संधिच्छेद

'म' संबंधी नियम

यदि **'म्'** के पश्चात **'क'** से **'म्'** तक कोई व्यंजन आए, तो **'म्'** उस व्यंजन वर्ग के पाँचवें वर्ण में बदल जाता है अर्थात **'क्'** का **'ङ'**, **'च'** का **'ञ्'**, **'ट'** का **'ण'** **'त्'** का **'न्'** और **'प्'** का **'म्'** हो जाता है; जैसे–

किम्	+	कर	=	किंकर (किङ्कर)	सम्	+	तोष	=	संतोष (सन्तोष)

Scanned with CamScanner

(2) व्यंजन संधि– किसी व्यंजन का किसी व्यंजन या स्वर से मेल होने पर व्यंजन में जो परिवर्तन होता है, उसे **व्यंजन संधि** कहते हैं।

व्यंजन संधि के नियम

1. वर्ग के पहले वर्ण (क्, च्, ट्, त्, प्) का तीसरे वर्ण (ग्, ज्, ड्, द्, ब्) में परिवर्तन–

दिक्	+	दर्शन	=	दिग्दर्शन
दिक्	+	अंत	=	दिगंत
भगवत्	+	गीता	=	भगवद्गीता
तत्	+	अनुसार	=	तदनुसार
वाक्	+	ईश	=	वागीश
अच्	+	अंत	=	अजंत
सत्	+	गति	=	सद्गति
तत्	+	भव	=	तद्भव

2. वर्ग के पहले वर्ण का पाँचवें वर्ण में परिवर्तन–

अगर वर्ग के पहले वर्ण (**'क्'**, **'च्'**, **'ट्'**, **'त्'**, **'प्'**) के पश्चात **'न'** अथवा **'म'** आए, तो प्रथम वर्ण पाँचवें में बदल जाता है, जैसे– **'क' का 'ङ'**, **'च' का 'ञ'**, **'ट्' का 'ण'**, **'त्' का 'न्'** और **'प्' का 'म'** हो जाता है। निम्नलिखित उदाहरण इस तरह हैं–

उत्	+	नयन	=	उन्नयन
चित्	+	मय	=	चिन्मय
तत्	+	मय	=	तन्मय
दिक्	+	नाग	=	दिङ्नाग
उत्	+	नायक	=	उन्नायक
सत्	+	मति	=	सन्मति
सत्	+	नारी	=	सन्नारी
उत्	+	नति	=	उन्नति
वाक्	+	मय	=	वाङ्मय

'त्' संबंधी विशेष नियम

1. यदि **'त्'** व्यंजन के साथ **च, छ** आता है, तो **'त्'** का परिवर्तन **'च्'** में हो जाता है। इसी प्रकार **'त'** के पश्चात **ज, झ** हो, तो **'ज्'** हो जाता है तथा **'त्'** के पश्चात **'ल'** होने पर **'ल्'** हो जाता है; जैसे–

उत्	+	ज्वल	=	उज्ज्वल
जगत्	+	जननी	=	जगज्जननी
तत्	+	लीन	=	तल्लीन
सत्	+	जन	=	सज्जन
सत्	+	चरित्र	=	सच्चरित्र
उत्	+	लास	=	उल्लास

2. यदि **'त्'** के बाद **'ह'** व्यंजन आए, तो **'त्'** का **'द्'** तथा **'ह'** का **'ध'** हो जाता है; जैसे–

उत्	+	हार	=	उद्धार
पत्	+	हति	=	पद्धति
उत्	+	हत	=	उद्धत
उत्	+	हरण	=	उद्धरण

3. यदि **'त्'** के पश्चात **'श'** आए, तो **'त्'** का **'च'** और **'श'** का **'छ'** हो जाता है; जैसे–

उत्	+	शिष्ट	=	उच्छिष्ट
तत्	+	शिव	=	तच्छिव
उत्	+	श्वास	=	उच्छ्वास
सत्	+	शास्त्र	=	सच्छास्त्र

'छ' संबंधी नियम

यदि किसी स्वर के पश्चात **'छ'** आ जाए, तो **'छ'** से पहले **'च्'** वर्ण जुड़ जाता है; जैसे–

वृक्ष	+	छाया	=	वृच्छाया
जगत	+	छाया	=	जगच्छाया
परि	+	छेद	=	परिच्छेद
स्व	+	छंद	=	स्वच्छंद
अनु	+	छेद	=	अनुच्छेद
संधि	+	छेद	=	संधिच्छेद

'म' संबंधी नियम

यदि **'म्'** के पश्चात **'क'** से **'म्'** तक कोई व्यंजन आए, तो **'म्'** उस व्यंजन वर्ग के पाँचवें वर्ण में बदल जाता है अर्थात **'ङ'**, **'च'** का **'ञ्'**, **'ट'** का **'ण'** **'त्'** का **'न्'** और **'प्'** का **'म्'** हो जाता है; जैसे–

किम्	+	कर	=	किंकर (किङ्कर)
सम्	+	तोष	=	संतोष (सन्तोष)

Scanned with CamScanner

सम् + जीवन = संजीवन (सञ्जीवन)
सम् + भाषण = संभाषण (सम्भाषण)
सम् + ध्या = संध्या (सन्ध्या)

सम् + गति = संगति (सङ्गति)
सम् + बोधन = संबोधन (सम्बोधन)
सम् + भव = संभव (सम्भव)

शब्द के अंत में अनुस्वार सदैव 'म्' का ही रूप लेता है।

अन्य नियम

1. 'म्' के बाद 'य', 'र', 'ल', 'व', 'श', 'ष', 'स', 'ह' आने पर 'म्' का रूपांतरण अनुस्वार में हो जाता है; जैसे–

सम् + योग = संयोग
सम् + शय = संशय

सम् + स्मरण = संस्मरण
सम् + रक्षण = संरक्षण

2. 'म्' के बाद 'म' आने पर द्वित्व 'म्म' का प्रयोग किया जाता है, वहाँ अनुस्वार नहीं आता है; जैसे–

सम् + मोहन = सम्मोहन

सम् + मति = सम्मति

न् का ण

'ऋ', 'र', 'ष' से 'न' का 'ण' हो जाता है, परंतु यदि उसके पश्चात 'च' वर्ग, 'ट' वर्ग, 'त' वर्ग तथा 'श' और 'स' आ जाए, तो 'न' का 'ण' नहीं होता; जैसे–

हर + न = हरण
परि + नाम = परिणाम

भूष + अन = भूषण
शोष + अन = शोषण

विशेष अर्जुन, दुर्जन, दर्शन, रतन, अर्चना, पर्यटन इत्यादि इसके अपवाद हैं, क्योंकि इन शब्दों में क्रमश: 'श', 'ज', 'त' 'च' और 'ट' के आने के कारण 'न' का 'ण' नहीं हुआ।

'स' का 'ष'

'स' से पूर्व अ, आ से भिन्न स्वर हो, तो 'स' का 'ष' हो जाता है; जैसे–

अभि + सेक = अभिषेक

वि + सम = विषम

विशेष वि + स्मरण = विस्मरण, अनु + स्वार = अनुस्वार, अनु + सरण = अनुसरण इसके अपवाद हैं।

(3) विसर्ग संधि– विसर्ग के बाद स्वर या व्यंजन के आने पर विसर्ग में होने वाले परिवर्तन को **विसर्ग संधि** कहते हैं।
जैसे– मन: + अनुकूल = मनोनुकूल

विसर्ग संधि के कुछ नियम

1. विसर्ग का 'ओ' में परिवर्तन–

यदि विसर्ग के पहले 'अ' हो और बाद में 'अ' हो या किसी वर्ग के **तीसरे**, **चौथे**, **पाँचवें** अथवा **य**, **र**, **ल**, **व**, **ह** में से कोई वर्ण हो, तो विसर्ग का 'ओ' हो जाता है; जैसे–

: + ग = ओ – तम: + गुण = तमोगुण
: + ब = ओ – तप: + बल = तपोबल
: + र = ओ – मन: + रथ = मनोरथ
: + व = ओ – मन: + व्यथा = मनोव्यथा
: + ह = ओ – मन: + हर = मनोहर
: + द = ओ – यश: + दा = यशोदा

: + भ = ओ – तप: + भूमि = तपोभूमि
: + ध = ओ – पय: + धर = पयोधर
: + ज = ओ – सर: + ज = सरोज
: + न = ओ – मन: + नीत = मनोनीत
: + ल = ओ – तप: + लाभ = तपोलाभ

Scanned with CamScanner

2. विसर्ग का 'र' में परिवर्तन–

यदि विसर्ग के पहले **अ, आ** को छोड़कर कोई **अन्य स्वर** हो और विसर्ग का मेल किसी वर्ग के **तीसरे, चौथे** और **पाँचवें** वर्ण से हो अथवा **य, ल, व, ह** में से कोई वर्ण हो, तो विसर्ग का **'र'** हो जाता है; जैसे–

: + अ = र – निः + अर्थक = निरर्थक	: + ई = री – निः + ईश्वर = निरीश्वर
: + आ = रा – निः + आशा = निराशा	: + वा = र्वा – आशीः + वाद = आशीर्वाद
: + उ = रु – निः + उत्तर = निरुत्तर	: + भा = र्भा – दुः + भाग्य = दुर्भाग्य
: + ज = र्ज – निः + जन = निर्जन	

3. विसर्ग का 'श्' में परिवर्तन–

यदि विसर्ग के पहले कोई स्वर हो और बाद में **च, छ, श** हो, तो विसर्ग का **'श'** हो जाता है। जैसे–

: + च = श् – निः + चय = निश्चय	: + श = श् – निः + शस्त्र = निश्शस्त्र
: + छ = श् – निः + छल = निश्छल	: + शा = श् – दुः + शासन = दुश्शासन

4. विसर्ग का 'स्' में परिवर्तन–

यदि विसर्ग के बाद **त्, थ्, प्, स्** हो, तो विसर्ग का **स्** हो जाता है। जैसे–

: + त् = स् – नमः + ते = नमस्ते	: + स् = स् – निः + सहाय = निस्सहाय
: + थ् = स् – अंतः + थल = अंतस्थल	

5. विसर्ग का 'ष्' में परिवर्तन–

यदि विसर्ग के पहले **इ, उ** हो और बाद में **क, ख, ट, ठ, प, फ** हो, तो विसर्ग का **ष्** हो जाता है; जैसे–

: + क् = ष् – निः + कलंक = निष्कलंक	: + प = ष् – दुः + प्रभाव = दुष्प्रभाव
: + फ = ष् – निः + फल = निष्फल	: + ट = ष् – धनुः + टंकार = धनुष्टंकार

6. विसर्ग का लोप होना–

(i) यदि विसर्ग के बाद **'र'** आए, तो वहाँ विसर्ग का **लोप** हो जाता है और विसर्ग का पहला स्वर **दीर्घ** हो जाता है; जैसे–

निः + रोग = नीरोग	निः + रस = नीरस
निः + रज = नीरज	निः + रव = नीरव

(ii) यदि विसर्ग के पहले **अ, आ** हो और विसर्ग के बाद कोई **भिन्न स्वर** हो, तो विसर्ग का **लोप** हो जाता है; जैसे–

अतः + एव = अतएव	ततः + एव = ततएव

7. विसर्ग का नहीं बदलना–

यदि विसर्ग से पहले **'अ'** हो और विसर्ग का मेल **क, ख, प, फ** से हो, तो विसर्ग **नहीं** बदलता; जैसे–

अंतः + करण = अंतःकरण	अधः + पतन = अधःपतन
प्रातः + काल = प्रातःकाल	पयः + पान = पयःपान

Scanned with CamScanner

आओ पाठ दोहराएँ

- संधि शब्द का अर्थ– जोड़, मेल, समझौता।
- दो शब्द या शब्दांश जब परस्पर मिलते हैं, तो उनके मिलने से स्वर तथा व्यंजन में जो परिवर्तन आता है, उसे संधि कहते हैं।
- संधि के भेद– स्वर संधि, व्यंजन संधि और विसर्ग संधि।
- स्वर संधि के भेद– दीर्घ संधि, गुण संधि, वृद्धि संधि, यण संधि, अयादि संधि।
- व्यंजन संधि – किसी व्यंजन का किसी व्यंजन या स्वर से मेल होने पर व्यंजन में जो परिवर्तन होता है, उसे व्यंजन संधि कहते हैं।
- विसर्ग संधि– विसर्ग के बाद स्वर या व्यंजन के आने पर विसर्ग में होने वाले परिवर्तन को विसर्ग संधि कहते हैं।

अभ्यास

मौखिक

कौशल-वाचन (बोध, संवाद)

1. संधि किसे कहते हैं?
2. यदि विसर्ग के पहले कोई स्वर हो और बाद में च, छ, श हो, तो विसर्ग किसमें परिवर्तित हो जाएगा?
3. व्यंजन संधि में वर्ग के पहले वर्ण का किस वर्ण में परिवर्तन होगा?

लिखित

कौशल-लेखन (व्याकरण, शब्दावली, लिखावट)

1. निम्नलिखित शब्दों के सही संधि-विच्छेद पर ✓ निशान लगाइए–

(क) अत्यधिक	=	अति + अधिक ☐	अत्य + धिक ☐	अत + अधिक ☐
(ख) पावन	=	प + अवन ☐	पो + अन ☐	पौ + अन ☐
(ग) नमस्कार	=	नमः + कार ☐	नमस् + कार ☐	नम + स्कार ☐
(घ) उल्लास	=	उल् + लास ☐	उत् + लास ☐	उल्ल + आस ☐
(ङ) महौज	=	महा + औज ☐	महा + ओज ☐	मह + ओज ☐

2. निम्नलिखित संधि के उचित भेद पर ✓ निशान लगाइए–

(क) महर्षि	=	गुण संधि ☐	दीर्घ संधि ☐
(ख) तथैव	=	गुण संधि ☐	वृद्धि संधि ☐
(ग) मात्रादेश	=	यण संधि ☐	दीर्घ संधि ☐
(घ) निष्फल	=	विसर्ग संधि ☐	व्यंजन संधि ☐
(ङ) तद्भव	=	व्यंजन संधि ☐	स्वर संधि ☐
(च) स्वागत	=	व्यंजन संधि ☐	स्वर संधि ☐

3. निम्नलिखित संधि को उनके शीर्षक तक पहुँचाइए–

दीर्घ संधि ....

वृद्धि संधि ....

यण संधि ....

गुण संधि ....

अयादि संधि ....

4. संधि कीजिए-

(क) विद्या + आलय – ....
(ख) सदा + एव – ....
(ग) हिम + आलय – ....
(घ) तपः + लाभ – ....
(ङ) निः + संदेश – ....
(च) सु + अच्छ – ....
(छ) धर्म + आत्मा – ....
(ज) सत् + जन – ....
(झ) जगत + नाथ – ....
(ञ) सप्त + ऋषि – ....
(ट) पितृ + इच्छा – ....
(ठ) सेवा + अर्थ – ....
(ड) महा + औषध – ....
(ढ) सुर + इंद्र – ....
(ण) अभि + इष्ट – ....
(त) महा + ऐक्य – ....
(थ) इति + आदि – ....
(द) उमा + ईश – ....

5. संधि-विच्छेद कीजिए-

(क) रवींद्र – ....
(ख) रमेश – ....
(ग) सरोज – ....
(घ) गिरीश – ....
(ङ) सूक्ति – ....
(च) उच्चारण – ....
(छ) महर्षि – ....
(ज) निराशा – ....
(झ) दुःशासन – ....
(ञ) संवाद – ....
(ट) निश्छल – ....
(ठ) उल्लेख – ....
(ड) नदीश – ....
(ढ) लोकोक्ति – ....
(ण) परीक्षा – ....
(त) कवींद्र – ....
(थ) यथेष्ट – ....
(द) रेखांकित – ....
(ध) महोदय – ....
(न) भानूदय – ....

मूल्यपरक प्रश्न

6. एक ज़िम्मेदार मॉनीटर या राजनेता को किससे संधि करनी चाहिए और क्यों?

गतिविधि

रचनात्मक-लेखन (विचार, भाव, लिखावट)

- दिए गए वाक्यों में जिन-जिन शब्दों में संधि हो सकती है, उनकी संधि करके यह अनुच्छेद दुबारा लिखिए–

गुरु जी सूर्य अस्त से पहले विद्या आलय के मैदान में आए और सभी छात्रों से बोले, "जल्दी से छात्र आवास में जाकर आराम कर लो। थोड़ी देर में वार्षिक उत्सव की तैयारी करनी है। प्रति एक को इस उत्सव में अहम भूमिका निभानी है।

....
....
....

Scanned with CamScanner